

दगादा ॥ तपसि च उदसं सदा सुमिणा एादवा ॥
 पुष्पिदा उरा लाण ॥ कमन्न कक्षाणा फल विवि वि
 सामत विस्म ॥ ११ ॥ तपाण
 रकाणा ढगा ॥ सिद्ध च स्मरव
 त्रिपय मठं सुचा नि स म्म द्वा
 हय दि द्वा ॥ तसु मिणा उ गि द्वा ति श्वा ॥ ईदं अ पुं प
 वि सं ति श्वा ॥ अन्न मन्नां स वि सं ला वि ति श्वा ॥ तप



तसु विणाल
 त्रिदस्मा ॥ अं
 द्वुदकाव

